पीएच0डी0 शोध-प्रारूप की रूपरेखा

कुँड़ुख़ साहित्यकार फ्रां सस्का कुजूर जीवन और साहित्य: एक अध्ययन

वश्व वद्यालय कुँड़ुख़ वभाग, राँची वश्व वद्यालय, राँची से

पीएच॰डी॰ उपा ध हेतु प्रस्ता वत शोध-प्रारूप की रूपरेखा

संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ. कशोर सुरिन
सहायक प्राध्यापक
वश्व वद्यालय मुण्डारी वभाग
राँची वश्व वद्यालय, राँची

शोधार्थी

निपुल लकड़ा
एम.ए. कुँड़ुख़
यू0जी0सी, नेट
वश्व वद्यालय कुँड़ुख़ वभाग
राँची वश्व वद्यालय, राँची
मो0 नं0-8797750331
nipullakra1994@gmailcom

भू मका

झारखण्ड प्रदेश वन, जंगल, पहाड़, पर्वत एवं खनिज सम्पदाओं से परिपूर्ण है। उसी प्रकार यहाँ की भाषा संस्कृति की भी उद्‌भुत पहचान रही है। झारखण्ड आदिवासी बहुल राज्य है, यहाँ की कला संस्कृति का अपना एक अलग पहचान है। झारखण्ड की संस्कृति में गीत, नृत्य एवं वादन कला, लोगों में समाहित है। इसके संबंध में कुँड़ुख़ में एक कहावत प्रच लत है -

''एकना दिम तोकना

कत्था दिम डंडी''।

अर्थात् चलना ही नृत्य है तथा बोलना ही गीत है जिसके कारण यहाँ चारों-ओर गीतकार, नतर्क तथा वादक भरे पड़े हैं।

मनुष्य सृष्टि काल में ही अब अपनी अनुभूति को व्यक्त करने की इच्छा करता है। तब उसकी सहानुभूति से प्रेरित होकर उसकी रागाणात्मक प्रवृति लयबद्‌ध होकर निकलती है और गीत का रूप धारण कर लेती है हृदय से जो भावनाएँ निसृत हुई होगी वहीं आगे चलकर गीतों के रूप में परिवर्तित हुई होगी।

कुँड़ुख़ शष्ट साहित्य प्रारंभ 1868-1874 ई0 के आस-पास माना जाता है। जिस समय छोटानागपुर में अंग्रेजों का शासन था। सबसे पहले 1868 के जनरल अंक 35 में ब्रीफ ग्रामर एण्ड बुकेबुलेरी ऑफ उराँव लैंग्वेज लख कर प्रका शत करवाया।

फ्लैक्स साहब, हान साहब एवं ग्रीगनार्ड साहब ने कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिए।

आधुनिक रचनाकारों में सबसे पहले धर्मदास लकड़ा का नाम आता है, जो सबसे पहले कुँड़ुख़ पुरखा कहानी एवं गीतों को संग्रह कर समाज के बीच रखा। इसके अलावा सामुएल रंका 1937 ई0 में कुँड़ुख़ भाषा का ल प बनाया था।

1940-41 के बाद से कुँड़ुख़ भाषा साहित्य का वकास तेजी से हो रहा है। इस समय के रचनाकार धर्मदास लकड़ा, बिहारी लकड़ा, तेजू भगत, थोथे उराँव, जमुना भगत, जु लयस तिग्गा, अह्लाद तिर्की, दवले कुजूर, पं डत आयता उराँव, शांति प्रकाश प्रबल बाखला, मखाईल तिग्गा, सी0 ब्लेस, जस्टिन एक्का 1970 के बाद कुँड़ुख़ साहित्यकार डॉ. निर्मल मंज, इन्द्रजीत उराँव, जॉन लकड़ा, पीयुस लकड़ा, डॉ. नारायण भगत, डॉ. नारायण उराँव, प्रो0 महाबीर उराँव, प्रो0 चैठी उराँव, वमल टोप्पो, प्रो0 महेश भगत आदि कुँड़ुख़ साहित्य का भंडार भर रहे हैं। आधुनिक क वयों में इन क वयों का नाम बड़े आदर के साथ लया जा सकता है। जैसे- दवले कुजूर, डॉ. नारायण भगत, प्रो0 महेश भगत, गोपाल उराँव आदि

इन नामों में एक व शष्ट नाम और पहचान है। डॉ. फ्रां सस्का कुजूर जो वनोबा भावे वश्व वद्यालय, हजारीबाग में इतिहास वभाग की प्राध्या पका थी। इन्होंने कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के प्रति राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना योगदान दे रही हैं। इनका जन्म 1956 ई0 में गुमला जिला के पुगु खोपाटोली में हुआ है।

डॉ. फ्रां सस्का कुजूर को कुँड़ुख़ भाषा के प्रति अटूट लगाव है, वे अपनी मातृभाषा कुँड़ुख़ को वस्तृत एवं समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

शोध वषय की प्ररेणा:

झारखण्ड मेरी जन्मभू म है और बचपन से ही कुँड़ुख़ भाषा के प्रति मेरी लगाव रही है। मातृभाषा कुँड़ुख़ होने के कारण मैं स्नातक, स्नातकोत्तर एवं बी0एड0 कुँड़ुख़ भाषा से की। इस दौरान मुझे कुँड़ुख़ भाषा को और अ धक जानने का अवसर प्राप्त हुआ। स्नातकोत्तर के दौरान मुझे ऐसा प्रतीत हुआ क क्यों न अपनी भाषा अर्थात् मातृभाषा के लए मैं अपना योगदान दूँ क्यों क अध्ययन काल के दौरान मुझे इस भाषा के सहायक पाठ्य-साम ग्रयों का कमी महसूस हुआ।

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य में सहायक पाठ्य साम ग्रयों में अभाव के दौरान मुझे एक ऐसे रचनाकार की रचनाएँ मली और मुझे इस भाषा साहित्य के लए कुछ करने का जोश उत्पन्न हुआ, वो रचनाकार डॉ. फ्रां सस्का कुजूर। इनकी रचनाओं से इतनी प्रभा वत हुई क मुझे लगा जब भी मुझे मौका मले तो मैं इनके जीवन एवं साहित्य पर शोध कार्य करूँगी। इस वषय पर मैं अपने सेवानिवृत वभागाध्यक्ष डॉ. हरि उराँव से चर्चा की थी तो उन्होंने मुझे ''कुँड़ुख़ साहित्यकार फ्रां सस्का कुजूर जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन'' वषय पर कार्य करने के लए प्रेरित कया, जिससे मुझमें एक नई उमंग उत्पन्न हुई। मेरे गुरूजनों, परिवार के सदस्यों, मत्रों एवं शुभ चंतकों ने भी इस शोघ कार्य के लए मुझे प्रेरित कया।

शोध वषय का औ चत्य :

 कसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता जब तक की उसकी उपयो गता समाज, प्रदेश एवं देश के लए न हो।

शोध का उद्देश्य :

1) कुँड़ुख़ साहित्य का गहन अध्ययन करना।

2) कुँड़ुख़ साहित्य का महत्व एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद् ध करना साथ ही इनके संकलन, संचयन एवं मूल्यांकन की दिशाएँ प्रशस्त करना।

3) कुँड़ुख़ साहित्य की प्रमुख साहित्यकार डॉ. फ्रां सस्का कुजूर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से उराँव जनजीवन एवं सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालना।

4) कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को सुदृढ़ बनाना।

5) झारखण्ड के सामाजिक सांस्कृतिक वकास में योगदान देना।

शोध का महत्व :

"कुँड़ुख़ साहित्यकार फ्रां सस्का कुजूर जीवन और साहित्य: एक अध्ययन" शोध से समाज में निम्न ल खत प्रभाव पड़ेगा:-

1) इस शोध प्रबंध के प्रकाशन में आने से समस्त कुँड़ुख़ भाषा-भा षयों एवं समाज में क व, कलाकारों और साहित्यकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा।

2) इनके समकालीन कुँड़ुख़ भाषा-भा षयों को साहित्य समीक्षा पर शोध के लए आदर्श साबित होगा।

3) निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा एवं एक नई जागृति उत्पन्न होगी।

4) अन्य जनजातीय भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

5) साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आ र्थक क्षेत्र के लए लाभकारी होगा।

6) इस शोध कार्य के प्रति भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

शोध व ध :-

निम्न ल खत व धयों के द्वारा शोध कार्य कया जा सकता है।

1) अवलोकन व ध

2) साक्षात्कार व ध

3) प्रश्नावली व ध

4) वश्लेषणात्मक व ध

उपकरण :-

निम्न ल खत सामग्री शोध के लए उपयोग कए जा सकते हैं-

1) शोध से संबं धत पुस्तकें, प्रका शत रचनाएँ, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।

2) पत्र-पत्रिकाएँ जैसे- आदिवासी, कुँडुख़ कत्थ ब़ीड़रना, कुँडुख़ डहरे, बकपून, बकहुही इत्यादि।

3) व भन्न पुस्तकालयों में अध्ययन।

4) टेप रिकार्डर (साक्षात्कार एवं सभा आदि के लए जरूरत)

5) कैमरा (आवश्यक चत्रों को एकत्रित करने, फोटो खींचने एवं व डयो तैयार करने के लए आवश्यक)

6) कुँडुख़ टाइम्स (www.kurukhtimes.com)

7) मोबाईल

8) कम्प्यूटर

9) इंटरनेट

10) पेपर इत्यादि।

अध्यायीकरण

शोध वषय : ''कुँड़ुख़ साहित्यकार फ्रां सस्का कुजूर जीवन और साहित्य : एक अध्ययन''

- प्रस्तावना
- शोध वषय की प्रेरणा
- औ चत्य
- उदेश्य
- महत्व
- शोध व ध

प्रथम अध्याय : कुँड़ुख़ साहित्य का सं क्षप्त परिचय

1. कुँड़ुख़ साहित्य का उद्भव एवं वकास
2. कुँड़ुख़ साहित्य का वधागत वकास
3. कुँड़ुख़ साहित्य का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदेय

द् वतीय अध्याय : कुँड़ुख़ साहित्य एवं कृतियाँ

1. प्राचीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ
2. मध्यकालीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ
3. आधुनिक साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

तृतीय अध्याय : फ्रां सस्का कुजूर की जीवन रेखाएँ

1. जन्म, परिवार एवं पारिवारिक पृष्ठ भू म
2. बाल्यावस्था, कशोरावास्था एवं युवावस्था
3. शक्षा
4. सेवा
5. कुँड़ुख़ भाषा की ओर झुकाव एवं प्रेरणा
6. व वध कार्य

चतुर्थ अध्याय: फ्रां सस्का कुजूर की वैयक्तिक वशेषताएँ

1. बाह्य वशेषताएँ

2. आंतरिक वशेषताएँ

क सरल, मलनसार एवं हँसमुख

ख स्वा भमानी

ग दृढ़निश्चयी

घ संवेदनशील

ड. वनम्रता

च. संग्रह वृति

छ. व्यक्तिवादी दृष्टिकोण

ज. धा र्मक आचरण

पंचम अध्याय : फ्रां सस्का कुजूर की समकालीन परिस्थिति

2. सामाजिक स्थिति

3. आ र्थक स्थिति

4. धा र्मक-सांस्कृतिक स्थिति

5. साहित्यिक स्थिति

षष्ठ अध्याय : फ्रां सस्का कुजूर की समग्र रचनाएँ

1. गद्यकार के रूप में

2. पद्यकार के रूप में

3. अनुवाद के रूप में

सप्तम अध्याय : कुँड़ुख़ साहित्य के वकास में फ्रां सस्का कुजूर का योगदान एवं स्थान

निष्कर्ष

1. परि शष्ट:

   क आधार ग्रंथों की सूची

   ख संदर्भ ग्रंथों की सूची

   ग साक्षात्कार की सूची

   घ चत्रावली

2. पत्र-पत्रिकाओं की सूची

नोट: आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में आं शक परिवत्र्तन कए जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डॉ. कशोर सुरिन
सहायक प्राध्यापक
वश्व वद्यालय मुण्डारी वभाग
राँची वश्व वद्यालय, राँची

शोधार्थी

निपुल लकड़ा
एम.ए. कुँड़ुख़
यू0जी0सी, नेट
वश्व वद्यालय कुँड़ुख़ वभाग
राँची वश्व वद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची

लेखक/लेखका पुस्तक का नाम प्रकाशक वर्ष

साहु, डॉ. गो वन्द- नागपुरी क व घासी रामः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रका शत 1976

दुबे डॉ. वश्वनाथ- धनीराम बक्शी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रका शत 1981

साहु, डॉ. सुखदेव- डॉ. भुवनेश्वर अनुजः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रका शत 2003

तिवारी डॉ. उमेश नन्द - आधुनिक नागपुरी साहित्य संदर्भ- प्रफुल्ल कुमार राय एक मूल्यांकन, झारखण्ड झरोखा, राँची 2005

गौंझू डॉ. राम गरिधारी- पीटर शांति नवरंगीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा, राँची 2014

केशरी डॉ. स वता- नागपुरी क व कंचन जीवन एवं साहित्य, नागपुरी संस्थान, पठोरिया, राँची 2015

संदर्भ ग्रंथों की सूची

लेखक/ले खका पुस्तक का नाम प्रकाशक वर्ष

कुजूर डॉ. फ्रां सस्का - कुँडुख़ क अनुगूँज (क वता संग्रह), अजीत प्रकाशन गुमला 2005

कुजूर डॉ॰ फ्रा सस्का - राजा अर्जून संह ऑफ पोराहाट- इतिहास, के॰ के॰ पब्लिकेशन इलाहाबाद 2007

कुजूर डॉ॰ फ्रा सस्का - बरचा ओन्टा रम्फ, झारखण्ड झरोखा राँची 2008

कुजूर डॉ. फ्रां सस्का- पाठन मेना, प्रतिमान प्रकाशन शवशक्ति लेन, कशोरगंज,हरमू पथ, राँची-834001 2008

कुजूर डॉ. फ्रां सस्का - झारखण्ड ओन्द नजइर झारखण्ड झरोखा राँची 2010

कुजूर डॉ. फ्रां सस्का - उराँव की ऐतिहा सक वरासत रोहतासगढ़, पृथ्वी प्रकाशन 126 वद्या वहार, रोहताक रोड न्यू दिल्ली-110024 2011

कुजूर डॉ. फ्रां सस्का - मूसल (हिन्दी कहानी संग्रह), अग्र ण पब्लिकेशन राँची 2011

कुजूर डॉ. फ्रां सस्का- उढ़ियारा पंजड़ा ता मैना, हिन्दराजी कुँडुख़ वकलूरिया खोंड़हा नई दिल्ली-110029, 2011

मंज डॉ0 कोरने लयुस- उराँव साहित्यकार, झारखण्ड झरोखा राँची 2017

खलखो डॉ0 बन्दे- कुँडुख़ शष्ट साहित्य का वश्लेषणात्मक अध्ययन, हिन्दराजी कुँडुख़ वकलूरिया खोड़हा 2021

पत्र-पत्रिकाएँ

पत्र-पत्रिकाओं का नाम अव ध प्रकाशक

आदिवासी (समाचार पत्र) राय साहेब बंदी राम उराँव, छोटानागपुर उन्नति समाज, 1932

आबुआ झारखण्ड इग्नेस कुजूर और इग्नेस बेक, झारखण्ड पार्टी 1947

सनगी दई तिमाही महली ल वंस तिर्की कुँड़ुख़ अखड़ा नई दिल्ली 1982

सरना फुल छः माही डॉ. हरि उराँव, सरना नवयुवक संघ राँची 1987

झारखण्ड समाचार इग्नेस कुजूर, राँची 1988

नाम कुँड़ुख़त डॉ. अगा पत तिर्की जीवन वकास मैत्री पत्थल गाँव, जशपुर - छत्तीसगढ़ 1998

कुँड़ुख़ डहरे (शोध पत्रिका) डॉ. हरि उराँव, कुँड़ुख़ लटरेरी सोसाइटी आॅफ इं डया, दिल्ली 2006

बकपून मा सक डॉ. हरि उराँव, गौतम बुद्धमार्ग बरियातु, 2011

Abstract (अंतर्राष्ट्रीय नई पत्रिका) डॉ. हरि उराँव, कुँड़ुख़ लटरेरी सोसाइटी आफ इं डया, दिल्ली, 2012

साँवसे खेखेल ता कुँड़ुख़ डॉ. हरि उराँव, कुँड़ुख़ लटरेरी सोसाइटी आफ इं डया, दिल्ली-2012

टैंको बेको मा सक के0 मंजु बाखला, कांके राँची, 2014

पड़हा डॉ. बंदे खलखो, बेड़ो, राँची, 2015

बकहुही तिमाही अद्दी कुँड़ुख चाला धुमकु ड़या पड़हा अखड़ा, राँची

कुँड़ुख़ बओत (वा र्षक लटरेरी पत्रिका) सय अथनस टोप्पो अरा निकोलस टोप्पो, कुँड़ुख़ सोसाइटी आफ इं डया मध्यप्रदेश चैप्टर